कुम्भ मेला पर वेद प्रचार शिविर

महर्षि दयानन्द ने मार्च 1867 और फरवरी 1879 में हरिद्वार में आयोजित कुम्भ मेला अवसर पर पाखण्ड खण्डिनी पताका फहरा कर मूर्तिपूजा, अवतारवाद, श्राद्ध, तीर्थाटन आदि पाखण्डों की जमकर आलोचना की थी। उनका चैलेंज था कि वेद के आधार पर इन्हें सिद्ध करो। उसी परम्परा को पुनरुज्जीवित करते हुए 7 मार्च 1986 से 15 अप्रैल 1986 तक हरिद्वार में सार्वदेशिक आर्य युवक परिषद ने एक बहुचर्चित वेद प्रचार शिविर का आयोजन किया था जिसकी चर्चा पहले की जा चुकी है। आर्यसमाज शक्ति नगर में सार्वदेशिक आर्य युवक परिषद ने एक गोष्ठी का आयोजन कर 12 मार्च 1998 से 14 अप्रैल 1998 तक कुम्भ मेला परिसर, हरिद्वार में पुनः वेद प्रचार शिविर लगाने का निर्णय लिया।

आर्यसमाज शक्ति नगर की गोष्ठी में निर्णय यह लिया गया था कि बत्तीस दिन के वेद प्रचार शिविर में रोजाना दो-दो घंटे की विचार गोष्ठियाँ पाखण्ड-खण्डन पर आयोजित की जायें, और 16-16 पृष्ठ के पाखण्ड खण्डन विरोधी पैम्फलेट हजारों की संख्या में छपवा कर कुम्भ परिसर में निःशुल्क बाँटे जायें। लगातार तीस दिन राष्ट्र के ज्वलंत मुद्दों पर तीन-तीन घंटे के राष्ट्रीय सम्मेलन आयोजित करने का निर्णय भी लिया गया था। लेकिन ये साहसिक निर्णय धन के अभाव तथा अन्य व्यावहारिक कठिनाइयों के चलते शतप्रतिशत पूरे न हो सके। लेकिन यह वेद प्रचार शिविर इस बार भी अपने भव्य प्रदर्शन के कारण सफल रहा। चतुर्वेद पारायण महायज्ञ, अखण्ड वेद प्रचार, निःशुल्क साहित्य वितरण, ऋषि लंगर, आवास की समुचित व्यवस्था सभी कुछ 1986 के वेद प्रचार शिविर जैसी ही थी। स्वामी इन्द्रवेश जी, स्वामी अग्निवेश जी तथा अन्य विद्वानों व संन्यासियों के प्रवचन यहाँ सुबह-शाम होते थे, योग शिविर अलग से चल रहा था। मैं स्वयं दो दिन इस शिविर में रहा। इससे कुछ ही दूरी पर राजसिंह आर्य आदि ने भी अपना शिविर लगा रखा था जहाँ सन्नाटा छाया रहता था। यह कार्यशैली का ही अन्तर नहीं था निष्ठा का भी अन्तर था जो इन दोनों शिविरों का तुलनात्मक अवलोकन करने पर सहज नजर आ जाता था। कुम्भ मेले के अवसर पर सन् 1986 के पश्चात् निरन्तर प्रत्येक छः साल के बाद हरिद्वार में वेद प्रचार शिविरों के आयोजन निरन्तर चल रहे हैं। 1992 में अर्धकुम्भ, 1998 में पूर्ण कुम्भ, 2004 में पुनः अर्ध कुम्भ मेले पर परिषद् द्वारा वेद प्रचार शिविर आयोजित किये जा चुके हैं।